डॉ. रमन सिंह
माननीय मुख्यमंत्री

छत्तीसगढ़ शासन
संस्कृति विभाग

श्री अजय चन्द्राकर
माननीय संस्कृति मंत्री

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन
वर्ष 2014-15

राज्योत्सव 2014, के अवसर पर संस्कृति विभाग के प्रकाशन का विमोचन

15 अगस्त 2014, सांस्कृतिक संध्या

छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन
वर्ष 2014-15

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित लेखक–पाठक संवाद
एवं पुस्तक प्रदर्शनी में पुस्तक विमोचन

संस्कृति विभाग

छत्तीसगढ़ शासन

मंत्री	–	माननीय श्री अजय चंद्राकर
सचिव	–	श्री रमेशचन्द्र सिन्हा, आई.ए.एस
अवर सचिव	–	श्री जे.एन. अवस्थी

संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व

संचालक	–	श्री राकेश चतुर्वेदी, आई.एफ.एस
संयुक्त संचालक	–	डॉ. राकेश कुमार अग्रवाल (प्रतिनियुक्ति)
उप संचालक	–	श्री राहुल कुमार सिंह
उप संचालक	–	श्री एस.एस.सी. केरकेट्टा
उप संचालक	–	श्री एस.बी. सतपाल (संविदा)
उप संचालक (वित्त)	–	श्री सी.आर. साहनी (प्रतिनियुक्ति)
उप संचालक	–	श्री जे.आर. भगत
उपसंचालक (अनुरक्षण)	–	श्री वीरेन्द्र भार्गव (प्रतिनियुक्ति)
पुरातत्वीय अधिकारी	–	डॉ. शिवाकांत बाजपेयी (प्रतिनियुक्ति)
मुख्य रसायनज्ञ	–	डॉ. कामता प्रसाद वर्मा
संग्रहाध्यक्ष	–	श्री प्रताप पारख
सहायक संचालक	–	डॉ. पूर्णश्री राउत (प्रतिनियुक्ति)

विभाग से सम्बद्ध गठित इकाइयां

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ	–	अध्यक्ष	डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र
छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग	–	अध्यक्ष	––रिक्त––
	–	सचिव	डॉ. सुरेन्द्र दुबे
छत्तीसगढ़ सिंधी साहित्य संस्थान	–	अध्यक्ष	––रिक्त––
	–	सचिव	पदेन

राज्य सम्मान समारोह, राज्योत्सव 2014

पुरखौती मुक्तांगन में आयोजित रायपुर साहित्य महोत्सव के अवसर पर
केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री महेश शर्मा एवं
श्री अजय चन्द्राकर, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, छत्तीसगढ

उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं–मान्यताओं का समावेश एवं उनके संवर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर बल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य, समुदायों के पारस्परिक संबन्धों को बनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संबन्धों की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा एवं राज्य की अन्य बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं राज्य के विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतःसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा, जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा। प्रदेश की आदिम संस्कृति के संरक्षकों और कलाकारों को दूरस्थ अंचलों से चिन्हांकित करने के परिणाममूलक प्रयास किए जाएंगे।

स्मारकों का संरक्षण हमारी संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक– सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतःसंबन्धो को नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध–संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से कराना विभाग का ध्येय है।

क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है–

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश–विदेश में उसका प्रचार–प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबंधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्यों में हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी राजभाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी के साथ–साथ राजभाषा के प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य।

वर्ष 2014–15 प्रमुख उपलब्धियां

संस्कृति विभाग राज्य के सर्वांगीण संस्कृति के संरक्षण, उन्नयन, लोकोन्मुखी और प्रचार–प्रसार तथा प्रलेखन आदि विविध क्षेत्रों पर वर्ष भर अनेक कार्यक्रम एवं गतिविधियों के आयोजन के माध्यम से विषेष रूप से सक्रिय रहा। इस वर्ष विभाग ने नई संस्थाओं के सृजन, नये पुस्तकों के प्रकाशन, नये पुरातत्वीय स्थलों पर उत्खनन तथा कतिपय अन्य विशेष आयोजन और गतिविधियां जिसमें सूरजकुण्ड, हरियाणा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय मेला, आदि–परब, लेखक–पाठक संवाद, पुस्तक मेला, विवेकानंद युवा उत्सव, राज्योत्सव इत्यादि सम्मिलित हैं, के माध्यम से नई ऊर्जा के साथ संस्कृति के क्षेत्र में नये कीर्तिमान रचने के अभिनव प्रयास में संलग्न रहा है। इस वर्ष विभाग द्वारा किये गये कार्यों के संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैं :–

पुरखौती मुक्तांगन – राज्य की संस्कृति, परंपरा, पुरातत्व, पर्यावरण और जीव–सृष्टि की सन्निधि में विकास की कल्पना को साकार करने हेतु पुरखौती मुक्तांगन का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ और राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के द्वारा इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आकार प्रदान करने का संकल्प जीवन्त हुआ।

पुरखौती मुक्तांगन रायपुर से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर ग्राम–उपरवारा में लगभग 200 एकड़ भूमि पर आकार ग्रहण कर रहा है।

माननीय राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम महोदय द्वारा पुरखौती मुक्तांगन के प्रथम चरण का लोकार्पण किया गया, लोकार्पण समारोह में माननीय राष्ट्रपति महोदय ने निर्माणाधीन इस योजना की सराहना की। राज्य की इस महत्वाकांक्षी परियोजना के परिसर में माननीय मुख्यमंत्रीजी के हाथों पारंपरिक पौधों का रोपण कर शिल्प ग्राम निर्माण का संकल्प लिया गया। इस योजना के निर्माण कार्य हेतु ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग, अभनपुर, रायपुर एवं छत्तीसगढ़ पर्यटन मण्डल, रायपुर को कियान्वयन एजेन्सी के रूप में दायित्व सौंपा गया है।

लगभग 200 एकड़ परिक्षेत्र में फैला पुरखौती मुक्तांगन परिवेशीय शैक्षणिक केन्द्र होगा। अभी तक 20 एकड़ में इसका विकास कार्य किया गया है, जिसके तहत लैण्डस्केपिंग, सिविल कार्य, फाउण्टेन एवं जल मंच का निर्माण कार्य कराया गया है। रॉक गार्डन निर्माण के लिए खनिज विभाग को 5 एकड़ भूमि अंकित करा दी गई है। इसी प्रकार मछली घर निर्माण हेतु मत्स्य विभाग को 3 एकड़ का क्षेत्र अंकित करा दिया गया है।

प्रथम चरण के विकास कार्य में भव्य प्रवेष द्वार, पर्यटक सूचना केन्द्र, पाथ–वे, माड़ियापथ, बैगा चौक, देवगुड़ी, छत्तीसगढ़ हाट, आभूषण पार्क, छत्तीसगढ़ी चौक, जनजातीय पारंपरिक शेड, मनोरंजक उद्यान गृह, सड़क एवं जल–निकास, लौह शिल्पियों की कार्यशाला एवं भित्तिचित्र का पारंपरिक जाली निर्माण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मूर्तियों का निर्माण, चहारदीवारी निर्माण, छत्तीसगढ़ का मानचित्र का निर्माण, जिसमें छत्तीसगढ़ के विभूतियों को प्रदर्षित किया गया है, भू–दृश्य सौंदर्यीकरण एवं विद्युत साज–सज्जा आदि कार्य संपन्न किये जा चुके हैं। साथ ही इस वर्ष पाथवे में फाउण्टेन एवं वाटरफॉल को प्रारंभ किया गया है। वर्तमान में पुरखौती मुक्तांगन में स्थापित पारंपरिक लोक नृत्यों के भ्रमण हेतु पाथवे का निर्माण तथा लाईट एवं साउंड इफेक्ट का कार्य करवाया गया है।

पुरखौती मुक्तांगन में लोक प्रसंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस स्थल की एक उल्लेखनीय बात इस वर्ष यह रही कि राज्य शासन द्वारा इस वर्ष आयोजित रायपुर साहित्य महोत्सव के कार्यक्रम स्थल के रूप में इसका चयन किया गया। जिसके फलस्वरूप मुख्यमंत्री, संस्कृति मंत्री, केन्द्रीय संस्कृति मंत्री, गोवा के माननीय राज्यपाल तथा सैकड़ों के तादाद में देश भर से आयोजन में पधारे साहित्यकारों ने भी इस परिसर का अवलोकन किया और इसकी सराहना की।

इस स्थल पर नवीन प्रादर्शों की स्थापना के लिये कार्यवाही आरंभ की गयी है जिसके अंतर्गत रहस बेड़ा, घोटुल, देवगुड़ी, बस्तर के जनजातीय परंपरा के आवास तथा बस्तर क्षेत्र के चयनित पुरातत्वीय स्थलों के प्रादर्श निर्माण की कार्यवाही आरंभ की गयी है। इसके साथ ही परिसर को ग्रामीण परिवेशीय परिदृश्य देने के लिये कार्य आरंभ किये जा रहे हैं।

पुरखौती मुक्तांगन संग्रहालय में दर्षकों संख्या लगभग 3,50,000 रही। इस परिसर में गणमान्य आतिथियों, जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के समूहों का भी आगमन हुआ एवं इनके द्वारा पुरखौती मुक्तांगन के स्वरूप की प्रशंसा की गई है। इस प्रकार पुरखौती मुक्तांगन परिसर राज्य में पर्यटन के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक केन्द्र के रूप में आकार ले रहा है।

पुरातत्व

पुरातत्वीय स्थलों का संरक्षण एवं विकास –

विभाग द्वारा राज्य संरक्षित स्मारकों तथा प्रदेश में विस्तृत पुरातात्विक सम्पदा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए वैज्ञानिक ढंग से उन्नत तकनीकों द्वारा उत्खनन एवं विकास कार्य सम्पादित किए जा रहे हैं। पुरातत्वीय पर्यटन की दृष्टि से पुरास्थलों को विकसित किए जाने का कार्य प्रारंभ किया गया है, जिसके अन्तर्गत संरचनात्मक एवं रसायनिक संरक्षण कार्य, पुरातात्विक छायांकन, डाक्यूमेन्टेशन, प्रतिकृतियों का निर्माण तथा पुरातात्विक अन्तर्राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय संगोष्ठियों का आयोजन, सांस्कृतिक धरोहर के प्रति लोगों में जन–जागरूकता लाने के लिए विश्व–धरोहर सप्ताह जैसे अवसरों पर प्रदर्शनियों का आयोजन एवं महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत स्थलों से संबंधित प्रकाशन कार्य सम्पन्न किए गए हैं–

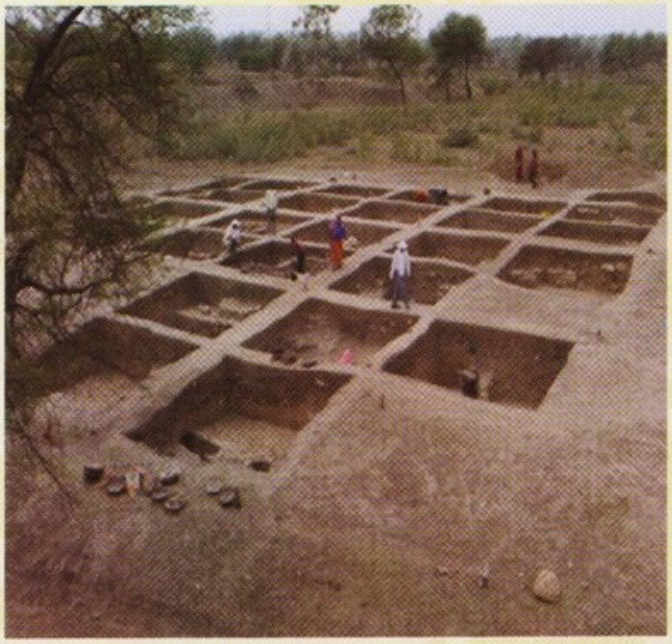

पुरातत्वीय सर्वेक्षण एवं उत्खनन :–

- वर्ष 2014–15 हेतु विभाग को केन्द्र सरकार द्वारा पुनः राजिम, जिला गरियाबंद, ग्राम तरीघाट, जिला दुर्ग एवं ग्राम डमरू, जिला बलौदाबाजार के उत्खनन की तथा नवीन पुरास्थल सिरकट्टी, जिला–गरियाबंद हेतु अनुज्ञप्ति/अनुमति प्रथम बार प्राप्त हुई है।

- वर्ष 2014–15 के लिए केन्द्र सरकार द्वारा जमराव, जिला–दुर्ग के पुरातात्विक अन्वेषण की अनुमति प्राप्त हुई है, जिसका अन्वेषण कार्य करवाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विभागीय स्तर पर वार्षिक कार्य–योजना के तहत सोढुंर, पैरी एवं मनियारी नदी का पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है तथा धमतरी जिले की तहसीलों का ग्रामवार पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है।

अनुरक्षण कार्य –

अनुरक्षण शाखा द्वारा वित्तीय वर्ष 2014–15 में 13वें वित्त आयोग से विभिन्न राज्य संरक्षित स्मारकों एवं उत्खनन स्थलों पर रिसेटिंग, अनुरक्षण, सुरक्षा घेरा, स्थल संग्रहालय भवन, उद्यान विकास, शेड निर्माण, चौकीदार क्वार्टर, गार्डरूम निर्माण कार्य पूर्ण/प्रगति पर है।

जिसमें शिव मंदिर हर्राटोला, सामत सरना, स्कूल के पास स्थित टीला डीपाडीह, शिव मंदिर डीपाडीह, देउर मंदिर महारानीपुर, देवरानी–जेठानी मंदिर ताला, लक्ष्मणेश्वर मंदिर खरौद तथा शिव मंदिर केशरपाल के अनुरक्षण एवं रिसेटिंग का पुरातत्वीय कार्य उल्लेखनीय है।

13वें वित्त आयोग मद से सम्पादित किये गये विविध कार्यों के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातीय क्षेत्रों में स्थित पर्यटनात्मक एवं सांस्कृतिक महत्व के राज्य संरक्षित पुरातत्वीय स्थलों के स्मारकों में संरचना के सुदृढ़ीकरण, सौंदर्य वृद्धि, सुरक्षा, समतलीकरण, उद्यान विकास, चहारदीवारी निर्माण, ट्यूबवेल व्यवस्था, पहुंच मार्ग निर्माण, स्थानीय संग्रहालय भवन निर्माण, साइनेज प्रदर्शन, प्राचीन स्मारकों में से चूने की कांक्रीट हटाकर मूल स्वरूप में लाने का कार्य सहित अन्य विकासात्मक कार्य संपन्न किये गये हैं।

संग्रहालय

अतीत के अवशेषों के संरक्षण, प्रदर्षन, अध्ययन तथा प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के स्रोतों के अनुसंधान के लिए संग्रहालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। राज्य शासन के विभिन्न संग्रहालयों के उन्नयन तथा नवीन संग्रहालयों की स्थापना के लिए विषेष रूप से सचेष्ट है। रायपुर संग्रहालय के सौन्दर्यीकरण तथा प्रदर्शन को आधुनिक स्वरूप देने की कार्यवाही की जा रही है। महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर छत्तीसगढ़ राज्य के साथ ही मध्यप्रदेष का भी सबसे प्राचीन संग्रहालय रहा है। इस संग्रहालय का भारत वर्ष के प्रमुख संग्रहालयों में 10वां स्थान है। इस संग्रहालय का लोकार्पण 21 मार्च 1953 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के कर–कमलों से किये जाने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान संग्रहालय भवन की स्थापना हेतु राजनांदगांव की महारानी श्रीमती ज्योति देवी ने एक लाख पच्चास हजार रूपये दान के रूप में दिये थे तथा राजनांदगांव के तत्कालीन शासक महंत घासीदास की स्मृति में इस संग्रहालय का नामकरण 'महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय' किया गया। संग्रहालय में बहुमूल्य पुरावषेषों एवं विविध कलाकृतियों में पुरातत्व दीर्घा, प्रतिमा दीर्घा, षिलालेख दीर्घा, जीव–जंतु दीर्घा, मानव शास्त्रीय दीर्घा प्रमुख हैं। संग्रहालय परिसर में भोरमदेव तथा लक्ष्मण मंदिर सिरपुर की प्रतिकृति एवं पाषाण प्रतिमाएं भी मुक्त रूप से सहज अवलोकन हेतु प्रदर्शित है। बिलासपुर में विभाग द्वारा संचालित संग्रहालय हेतु विभागीय भूमि–भवन की व्यवस्था की जा रही है। इसी प्रकार जगदलपुर में संग्रहालय भवन का निर्माण कराया गया है, जिसका लोकार्पण किया जा कर जनसामान्य के लिए खोल दिया गया है। कबीरधाम जिले में उत्खनित स्थल पचराही में संग्रहालय का उद्घाटन कर प्रदर्शन किया गया है तथा सिरपुर में संग्रहालय भवन का शिलान्यास कराया गया है। प्रदेश के महत्वपूर्ण उत्खनित पुरास्थलों डमरू तथा तरीघाट में भी संग्रहालय निर्माण की योजना है। अन्य जिलों में भी

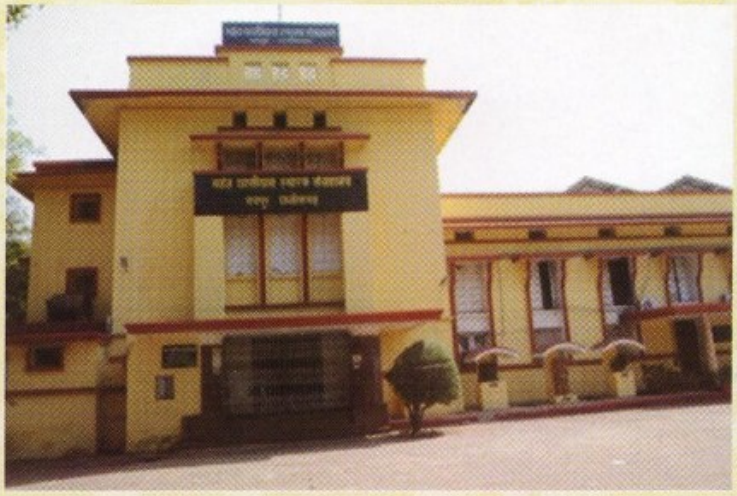

भवन निर्माण, संकलन तथा प्रदर्शन की कार्यवाही की जा रही है। डीपाडीह तथा महेशपुर में भी संग्रहालय भवन निर्मित कर प्रदर्शन किया जा रहा है। जनजातीय क्षेत्रों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है।

जिला पुरातत्व संघ द्वारा संचालित संग्रहालय

जिला पुरातत्व संघ, कोरबा में नवीन संग्रहालय भवन में प्रदर्शन का कार्य कर जनसामान्य के लिए खोल दिया गया है, इस हेतु आवश्यक राशि उपलब्ध कराई गई है। इसी प्रकार जिला पुरातत्व संघ कोरिया संग्रहालय में प्रदर्शन एवं नियमित गतिविधियां आरंभ करने हेतु अनुदान दिया गया है। जिला पुरातत्व संग्रहालय अंबिकापुर में भी जिला प्रषासन के सहयोग से प्रदर्षन का कार्य कराया गया है।

राजनांदगांव, रायगढ़, अंबिकापुर, कोरिया, कोरबा तथा धमतरी में जिला पुरातत्व संग्रहालयों का निर्माण कर उन्हें प्रदर्षन कर जनसामान्य के अवलोकन हेतु खोल दिया गया है। जिला संग्रहालयों द्वारा आयोजित संगोष्ठी, प्रदर्शनी एवं प्रकाशन के लिए भी आवश्यक सहयोग दिया जाता है। इसके अतिरिक्त कोण्डागांव, बेमेतरा, सूरजपुर, बलौदाबाजार तथा बालोद में जिला पुरातत्व संघ का गठन हो चुका है। शेष जिलों में गठन की कार्यवाही की जा रही है तथा पंचायत स्तर पर ग्राम पासिद, भोरमदेव तथा मठपुरैना में भी स्थानीय संग्रहालयों का निर्माण किया गया है।

रासायनिक संरक्षण

वित्तीय वर्ष 2014–15 में शिव मंदिर गिरोद, जिला रायपुर का रसायनिक संरक्षण कार्य विभागीय बजट के अंतर्गत किया गया एवं शिव मंदिर किरारीगोड़ी, शिव मंदिर नगपुरा जिला दुर्ग, शिव मंदिर गुमड़पाल जिला बस्तर, देवरानी–जेठानी मंदिर ताला जिला बिलासपुर का रसायनिक संरक्षण कार्य तेरहवें वित्त आयोग के अंतर्गत कराया जाना प्रस्तावित है।

ग्रंथालय

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर के अंतर्गत महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय है। वर्तमान में यह ग्रंथालय शहीद स्मारक भवन में संचालित है। ग्रंथालय में 50000 से भी अधिक पुस्तके उपलब्ध है, इस ग्रंथालय में इतिहास, पुरातत्व, नृतत्व शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, पर्यटन एवं कम्प्यूटर आदि के अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य से संबंधित ग्रंथ तथा गजेटियर उपलब्ध हैं। ग्रंथालय में प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र–छात्राओं के अध्ययन हेतु पृथक से अध्ययन कक्ष की सुविधा उपलब्ध है, साथ ही कम्प्युटरीकृत सुविधा शीघ्र आरंभ कराने की योजना है। ग्रंथालय में क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित साहित्य को उपलब्ध कराये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रकाशन

- विभाग ने प्रकाशन के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयास प्रारंभ किया है जिसके अंतर्गत निजी प्रकाशक के साथ सहयोगात्मक प्रकाशन के रूप में छत्तीसगढ़ के मूर्धन्य रचनाकारों की कृतियों के प्रकाशन तथा बस्तर के आदिवासी भाषा–बोलियों पर ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य किया गया। पहले चरण मे इस वर्ष 21 शीर्षक के विभिन्न खंड प्रकाशित किये गये। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों पर सामूहिक प्रकाशन एवं राज्य के पुरातत्वीय स्थलों पर मार्गदर्शी पुस्तिकाओं का भी प्रकाशन किया गया। इन दोनों तरह के कार्यों के लिए 25 शीर्षकों पर 125000 प्रतियां जन वितरण हेतु मुद्रित की गयी तथा विभाग की सामयिक पत्रिका बिहनिया अंक–12, वार्षिक शोध पत्रिका 'कोसल' प्रकाशित की गयी। विभाग द्वारा विभागीय पंचांग का प्रकाशन किया गया और साथ ही वर्ष भर चलने वाले विविध आयोजनों से संबंधित प्रकाशन भी मुद्रित कराये गये। छत्तीसगढ़ की स्थापत्य कला (मध्य छत्तीसगढ के विशेष संदर्भ में) का प्रकाशन किया गया है। राज्य संरक्षित 22 स्मारकों के एवं दो सांस्कृतिक ब्रोशर का प्रकाशन किया गया है।

- **वित्तीय वर्ष 2014–15 मे प्रकाशित सामग्री की सूची :–**

आर्ट एण्ड क्राफ्ट ऑफ छत्तीसगढ़, परफार्मिगं आर्ट्स ऑफ छत्तीसगढ़, सिरी गीता जी चो महेया (हल्बी रूप), रामना बेसोड़ (माड़िया–रामकथा सार), रामकत्था (कुडुख रामकथासार), रामला पिटो (गोंडी रामकथासार) ,रामकथा (हल्बी रामकथासार), श्री रामचरितमानस(हल्बी पद्यानुवाद सहित) लोकरंग छत्तीसगढ, छत्तीसगढ की शिल्पकला, पंडवानी, श्रीकांत वर्मा रचनावली (आठ खंड), नागवंश की पुराकथाएं, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि का प्रकाशन कराया गया है।

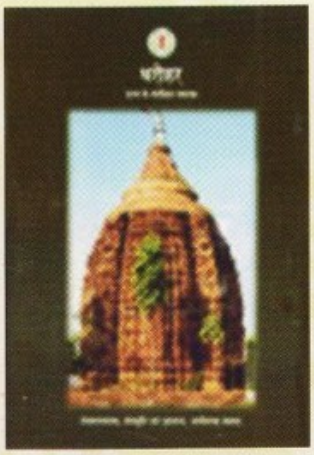

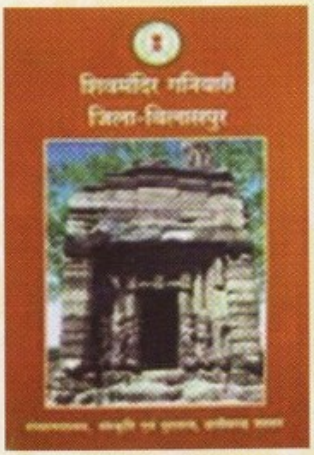

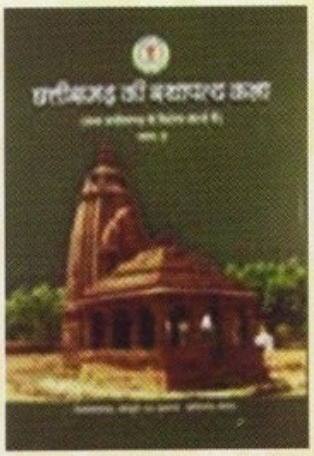
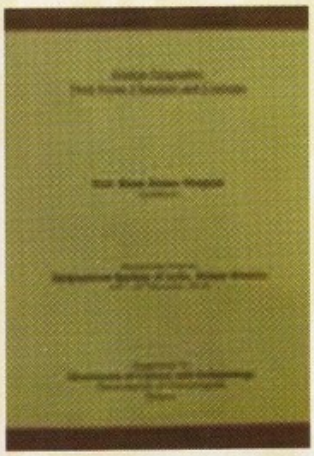

अभिलेखागार–

- अभिलेखों का स्थानान्तरण– मध्यप्रदेश शासन मंत्रालय के अभिलेखागार में संधारित 1907 से 1956 के मध्य के अभिलेखों में छत्तीसगढ़ एवं राष्ट्रीय महत्व के लगभग 5750 नस्तियों (लगभग 50000 पृष्ठों) का चयन किया जा चुका है। इन अभिलेखों का

डिजिटिलाइजेशन भी आरम्भ हो गया है।

- शोध सामग्री उपलब्ध कराना – शोधकर्ताओं को उनकी आवश्यकतानुसार अध्ययन हेतु संधारित अभिलेख उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन भारत सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन – अभिलेखागार के माध्यम से, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन भारत सरकार द्वारा प्रायोजित, डंदनेबतपचज त्मेवनतबम ब्मदजतम.डत्ब के तहत छत्तीसगढ़ में सर्वे में दर्ज लगभग 9500 पाण्डुलिपियों का अभिलेखन किया जा रहा है।

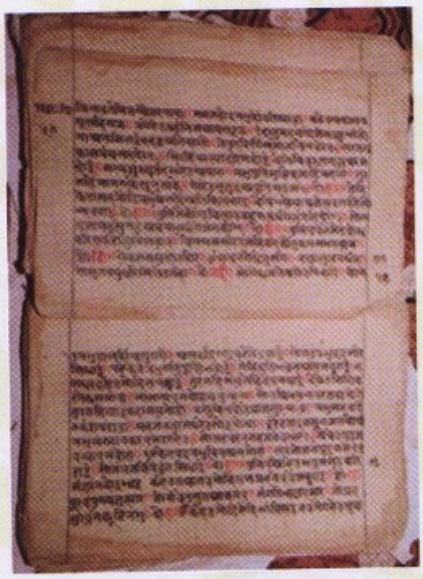

- अभिलेखागार भवन – नया रायपुर में वैज्ञानिक तरीका से राष्ट्रीय स्तर का राज्य अभिलेखागार भवन बनाए जाने की तैयारी प्रगति पर है।
- लोक अभिलेख अधिनियम व नियम – छत्तीसगढ़ शासन के मंत्रालयों, संचालनालयों, विभागों–कार्यालयों, निगम–मण्डलों, उपक्रमों इत्यादि के ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण (स्थायी तौर पर संधारण किए जाने वाले) अभिलेखों के प्रबंधन, संरक्षण व उनके उपयोग हेतु लोक–अभिलेख अधिनियम का मसविदा तैयार कर पारित किएजाने हेतु प्रस्तुत कर दिया गया है।
- अभिलेखों की प्रदर्शनी – छत्तीसगढ़ एवं राष्ट्रीय महत्व के सन् 1907 से 1956 के मध्य के ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण स्थायी प्रकृति के अभिलेखों की प्रदर्शनी इस वर्ष लगाया जाना है। इसके लिए लगभग 25 अभिलेखों का चयन कर लिया गया है।

राजभाषा प्रभाग

जन कल्याणकारी योजनाएं–

- **मासिक वित्तीय सहायता (पेंशन) योजना** : ऐसे व्यक्तियों को, जिन्होंने कला और साहित्य के विकास में योगदान दिया हो किन्तु अर्थाभावग्रस्त हैं और ऐसे लेखकों/कलाकारों के आश्रितों को जो

अपने परिवार को असहाय छोड़ गये हैं, मासिक वित्तीय सहायता पहुंचाना अथवा ऐसे व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने पर उनकी विधवा पत्नी, नाबालिग बच्चे तथा विशेष परिस्थितियों में आश्रित वृद्ध माता–पिता, नाबालिग भाई–बहन वित्तीय सहायता के पात्र होंगे। वित्तीय वर्ष 2014–15 हेतु वित्तीय सहायता योजना (पेंशन) अन्तर्गत 127 आश्रितों को कुल राशि रूपय 24,96,000/– दिया गया है। इसके अतिरिक्त मासिक वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु 13 साहित्यकारों/कलाकारों को पेंशनग्राहिता के लिए राशि रूपय 8,64,000/– की अनुपूरक बजट में मांग की गई है।

- **कलाकार कल्याण कोष योजना** : राज्य के साहित्यकारों/कलाकारों अथवा उनके परिवार के सदस्यों की लंबी तथा गंभीर बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु अथवा दैवीय विपत्ति की स्थिति में आर्थिक सहायता देना। छत्तीसगढ़ के मूल निवासी ऐसे व्यक्ति जो शासकीय कर्मचारी या स्वायत्तशासी/अर्धशासकीय संस्थाओं के कर्मचारी न हों छत्तीसगढ़ कलाकार कल्याण कोष से सहायता योजना अन्तर्गत 40 कलाकारों को आर्थिक सहायता कुल राशि रूपये 10,00,000/– (रू. दस लाख) दिया गया है।
- **विभिन्न अशासकीय संस्थाओं के संवर्धन विकास हेतु आर्थिक अनुदान योजना** : राज्य के कलाकार दलों/कलाकारों को प्रोत्साहित करना तथा प्रदर्शन हेतु समान अवसर एवं मंच प्रदान कराना। कलाकार दलों/कलाकारों के समस्त देयकों के भुगतानों की प्रक्रिया को मानक एवं पारदर्शी बनाया जाना। राज्य की ऐसी समस्त कला एवं सांस्कृतिक अशासकीय पंजीकृत संस्थाएं तथा जो कम से कम तीन वर्षों से कला एवं संस्कृति के विकास, संवर्धन में सक्रिय हैं। अपंजीकृत कला दल जो कम से कम तीन वर्षों से गांवों /कस्बों /ग्रामीण इलाकों में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शनों से लोकप्रियता हासिल कर चुके हैं। वित्तीय वर्ष 2014–15 में ऐसी अशासकीय संस्थाओं को अनुदान योजना के अंतर्गत 150 कलाकारों/संस्थाओं को सहयोग कुल राशि रूपये 2,07,83,825/– दिया गया है।

- **विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक कार्यक्रम :** इसके अतिरिक्त विभिन्न जिलों में सांस्कृतिक आयोजनों/महोत्सवों/मेलों/मड़ई हेतु जिला प्रशासन को वित्तीय वर्ष 2014–15 में आबंटित अनुदान 15 संस्थाओं के लिए कुल राशि रूपया 85,64,660/– दिया गया है।
- विभाग द्वारा विभिन्न जिलों से मांग अनुसार कुल 235 सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन में राशि रू. 5,35,31,927/– किया गया है।

मॉडलिंग–

- मॉडलिंग शाखा में गणेश, मंजुश्री, पद्मपाणि, महिषासुरमर्दिनी, नर्तक पुरुष, चंवरधारिणी नायिका, भू–स्पर्श बुद्ध, पुरूष प्रतिमा का मस्तक एवं अशोक वाटिका में सीता एवं हनुमान, प्रतीक्षारत नायिका, युगल प्रतिमा की प्रतिकृतियों के अलावा दो नग नवीन प्रतिमाओं का मोल्ड तैयार किया गया है। माडलिंग शाखा में 200 नग प्रतिकृतियां तैयार की गई।

कोपलवाणी वेलफेयर आर्गनाइजेशन विद्यालय, सुन्दर नगर रायपुर में 20 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यषाला एवं शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नाकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग में कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपरोक्त प्रशिक्षण के अंतर्गत कोपलवाणी वेलफेयर आर्गनाइजेशन विद्यालय, सुन्दर नगर में 65 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 14 प्रकार की प्रतिमाओं के कुल 277 नग एवं शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नाकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग में

कुल 70 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 12 प्रकार के प्रतिमाओं के 290 प्रतिकृतियों का निर्माण किया गया है।

मुक्ताकाशी मंच, आडिटोरियम हॉल एवं आर्ट गैलरी, –

छत्तीसगढ़ के लोककला एवं संस्कृति के विभिन्न विधाओं के प्रचार–प्रसार तथा संरक्षण, संवर्धन हेतु आवश्यक सुविधा प्रदान करने के उद्देष्य से महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में आर्ट गैलरी, मुक्ताकाषी मंच एवं आडिटोरियम हॉल का निर्माण किया गया है, जिसमें छत्तीसगढ़ के कलाकारों को अपनी प्रदर्षन हेतु विभागीय नियमानुसार स्थल उपलब्ध कराया जाता हैं।

उद्यान एवं शिल्प मड़ई मेला परिसर–

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय का राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना अलग महत्व है। यहां पर समय–समय पर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के अति–विषिष्ट व्यक्तियों तथा विदेषी पर्यटकों का आगमन होता है। उक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए तथा संग्रहालय परिसर को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के उद्देष्य से उद्यान विकसित किया गया है। इसके अतिरिक्त संग्रहालय के मेला–मड़ई परिसर में 'आकार' प्रशिक्षण कार्यशाला का आकर्षक स्थल है।

छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान –

राज्य के विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार–प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान के विकास हेतु छत्तीसगढ़ बहुआयामी सांस्कृतिक संस्थान का गठन किया गया है। संस्थान में ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों, कलाकारों की एक अंतः संकायी समिति होगी। साथ ही विविध कलाओं एवं संकायों से चयनित उच्चस्तरीय विशेषज्ञ सम्मिलित होंगे। यह केन्द्र समुदायों के विशिष्ट सांस्कृतिक कियाकलापों को सर्वत्र प्रोत्साहित

करेगा। इस योजना को साकार करने के उद्देश्य से आडिटोरियम, मुक्ताकाश मंच, आर्ट गैलरी आदि तैयार किया जाना है। 'बहुआयामी संस्कृति संस्थान' के निर्माण हेतु इंदिरा गांधी कृषि विश्व विद्यालय परिसर रायपुर में 10 एकड़ भूमि उपलब्ध हो चुकी है। इस हेतु कार्य का डी.पी.आर स्वीकृत हो चुका है। लोक निर्माण विभाग द्वारा कार्य की ऐजेंसी निर्धारित कर कार्य आरंभ कराया गया है जिसके लिए लोक निर्माण विभाग को राशि 2.00 करोड़ (रू. दो करोड़) मात्र की राशि प्रदान करा दी गयी है।

लोकोत्सव व पारंपरिक मेलों का विकास –

राज्य की धरोहर, कला, संस्कृति एवं परंपराओं के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से राजिम कुंभ, बस्तर दशहरा, शिवरीनारायण उत्सव, रायगढ़ में चक्रधर समारोह, सरगुजा में रामगढ़ उत्सव, बिलासपुर में बिलासा उत्सव, जांजगीर में जाज्वल्वदेव महोत्सव, सिरपुर में सिरपुर उत्सव, कांकेर में गढ़िया महोत्सव, करिया धुरवा मेला, रतनपुर उत्सव, मल्हार महोत्सव, खल्लारी महोत्सव, लोक मड़ई, डोंगरगढ़, भोरमदेव महोत्सव, ताला उत्सव आदि के आयोजन जिला प्रशासन व अन्य माध्यम से समन्वय कर संचालित किये जाते हैं, जिसमें प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ के कलाकारों की भूमिका होती है।

राज्योत्सव का आयोजन–

इस वर्ष राज्य की स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित राज्योत्सव में एक अभिनव प्रयोग कर 'परब छत्तीसगढ़' नामक आयोजन में छत्तीसगढ़ के पारम्परिक लोक जनजाति नृत्य, संगीत, गीत, और वाद्य यंत्रों पर विशेष प्रस्तुतियां संयोजित की गयी।

इसके अतिरिक्त राज्योत्सव कार्यक्रम में कोल्हापुर के जागो हिन्दुस्थानी समूह द्वारा राष्ट्रभक्ति के गीतों की प्रस्तुति दी गयी वहीं एबीलिटी अनलिमिटेड संस्था के शारीरिक क्षमता की सदस्यों द्वारा विस्मयकारी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गयी। राज्योत्सव का एक अन्य आकर्षण था कार्यक्रम 'कण–कण से छत्तीसगढ' जिसमें लकड़ी के बुरादों तथा रेत का इस्तेमाल करते हुए कलाकार द्वारा छत्तीसगढ़ से संबंधित विविध आकृतियां उकेरकर दर्शकों को अचंभित करने प्रस्तुति दी गई। राज्य स्थापना दिवस 01 नवम्बर के अवसर पर राज्य के विभिन्न अंचल के स्थापित लोक कलाकारों, कला दलों के साथ–साथ नवोदित और अल्पज्ञात कलाकारों को प्रस्तुति हेतु छत्तीसगढ़ के लोक पारम्परिक 36 विधाओं पर 800 कलाकारों द्वारा समन्वित प्रदर्शन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय कलाकारों के साथ नये कलाकारों की पहचान, प्रोत्साहन एवं रचनात्मक स्वरूप की झलक प्रस्तुत हुई। राज्योत्सव के पांच दिवसीय मुख्य समारोह में प्रदेश के लोक कलाकारों के साथ–साथ देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिष्ठित कलाकारों के द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई साथ ही जिलों में तीन दिवसीय राज्योत्सव के आयोजनों के सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए विभाग द्वारा समन्वय किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य दिवस के अवसर पर अन्तराष्ट्रीय व्यापार मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 21 नवम्बर, 2014 को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजिम कुंभ

राज्य के त्रिवेणी संगम राजिम जहाँ प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को पारंपरिक रूप से मेले का आयोजन होता था, उसे नियमित स्वरूप प्रदान कर राजिम कुंभ मेला समिति गठित किया गया है। राज्य के संस्कृति के विकास एवं पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु राजिम में शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, मठाधीश, संत–महात्माओं एवं जन प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर देश के कोने–कोने से साधु–संतों का समागम राजिम में होता है। छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम में इस आयोजन से संस्कृति, धरोहर, लोक परंपरा एवं कला को एक नया आयाम जुड़ा है। इस दौरान राष्ट्रीय स्तर व आंचलिक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, आध्यात्मिक संगोष्ठी एवं विभागीय प्रदर्षनी का आयोजन किया जाता है।

कला एवं संस्कृति–

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबन्धों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय

परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन–सहन, तौर तरीके, रीति–रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय कियाकलाप के साथ–साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। विभाग के अन्तर्गत 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग', 'स्वामी विवेकानंद विष्व प्रबुद्ध संस्थान', 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ' एवं 'छत्तीसगढ़ सिंधी साहित्य संस्थान' गठित है, जिसके माध्यम से सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के विकास एवं संवर्धन की दिशा में हो रहे कार्यों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

दस्तावेजीकरण के क्षेत्र में विभाग ने इस बार एक अभिनव कदम उठाया जिसके अंतर्गत सहपीडिया नामक संस्था के साथ एक अनुबंध किय गया है। इस अनुबंध के अनुसार सहपीडिया द्वारा राज्य के चयनित 100 सांस्कृतिक तत्वों/प्रतिमानों पर दृश्य श्रव्य एवं शाब्दिक प्रलेखन किया जाएगा तथा उन्हें अपनी बेब साईट पर अपलोड करेगा जिसके फलस्वरूप समूचे विश्व में विकीपीडिया की तरह ही सहपीडिया के माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति को संचालित किया जा सके साथ ही इनके प्रलेखन का कार्य भी पूरा किया जा सकेगा।

इस वर्ष विभाग द्वारा कतिपय नई संस्थाओं की स्थापना हेतु प्रयास किये गये जिसे राज्य शासन द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। इनमें माता कौशल्या शोध पीठ की राजिम में स्थापना, छत्तीसगढ़ी नाचा पर प्रशिक्षण हेतु राजनांदगांव में छत्तीसगढ़ी नाचा केन्द्र की स्थापना तथा

रायगढ़ घराने की कथक परम्परा को संरक्षित करने रायगढ़ में चक्रधर कथक केन्द्र की स्थापना प्रमुख है। इन्हें प्रारंभ करने के लिए विभाग द्वारा कार्यवाही प्रारंभ की जा रही है। संस्कृति विभाग ने शासन को स्वामी विवेकानंद अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना के लिए भी प्रयास किय जा रहे हैं तथा भारतीय एकात्मवाद के प्रणेता स्व. दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशती के अवसर पर उनकी स्मृति में शोध वृत्ति की स्थापना भी की जा रही है इस दिशा में शासन से स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है तथा धन राशि की उपलब्धता के आधार पर इन कार्यों का सम्पादन शीघ्र आरंभ किया जाएगा।

आयोजन एवं उत्सव–

राज्य, नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है ताकि राज्य की पारंपरिक संस्कृति अविच्छिन्न बनी रहे और समाज–संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इस तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया –

- लेखक पाठक संवाद एवं पुस्तक प्रदर्शनी उपलक्ष्य में छत्तीसगढ़ी एवं अन्य आंचलिक भाषाओं के साहित्यकारों एवं सुधी पाठकों को आमंत्रित कर परस्पर संवाद का आयोजन कर दिशाबोध एवं चेतना का संप्रेषण करवाया गया। इसी अवधि में आयोजित पुस्तक–प्रदर्शनी स्थानीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक रचनाओं को भी प्रदर्शित किया गया

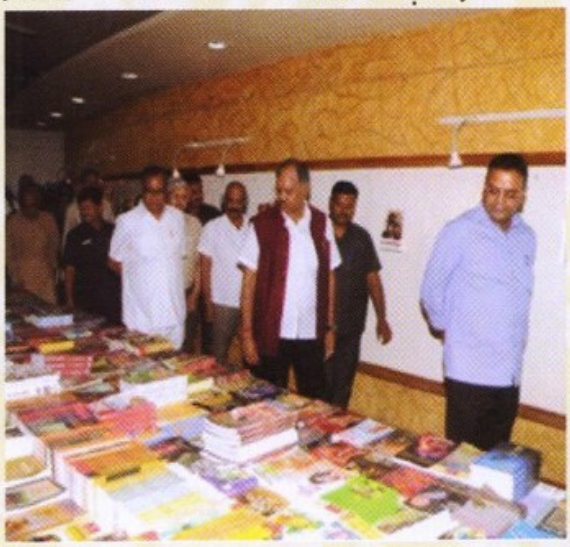

- **स्वामी विवेकानंद जयंती महोत्सव–** इस वर्ष स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस के असवर पर दिनांक 12–19 जनवरी 2015 तक विवेकानंद युवा उत्सव का वृहद आयोजन किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ 5000 हजार व्यक्तियों द्वारा जिसमें विद्यार्थी गण अधिक संख्या में थे जिसकी प्रतिभागिता से ''स्वच्छ छत्तीसगढ़–स्वस्थ छत्तीसगढ़' नामक दौड़ का आयोजन किया गया था तथा उसी दिन सायं लगभग 1200 स्कूली बच्चों द्वारा स्वामी विवेकांनद की स्वरूप धारण कर मशाल प्रज्जवलित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान आठ दिन तक स्वामी विवेकानंद जी पर देश के प्रमुख विचारकों के व्याख्यान आयोजित किये गये तथा स्वामी जी से जुड़े हुए विविध पक्षों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ भी इन आठों दिन आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एक राज्यस्तरीय भाषण प्रतियोगित भी आयोजित की गयी जिसका विषय 'मेरे सपनों का भारत' था। इस आयोजन के माध्यम से स्वामी विवेकानंद जिन्होने कलकत्ते के अलावा सर्वाधिक समय तक रायपुर में ही निवास किया था, को विभाग द्वारा इस कार्यक्रम श्रृंखला के प्रारंभ से श्रद्धा स्मरण किया गया तथा उनके आदर्शों को प्रचारित–प्रसारित करने के दिशा में एक नये तरह के अभियान की शुरूआत की।

- **आदि परब –** राष्ट्रीय नाटय विद्यालय दिल्ली एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त आयोजन में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक जनजातीय नृत्य संगीत के अतिरिक्त अन्य पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के कलाकारों के दलों के द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां मंचित की गई हैं जिससे सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में अग्रसर होने के अवसर की संभावना बढ़ी हैं।

- **राष्ट्रीय व्याख्यान माला** – विभाग द्वारा देश के विद्वान वक्ताओं तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा अर्जित ज्ञान के भण्डार को आम जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय व्याख्यानमाला की श्रृंखला आयोजित की गयी। इस वर्ष से आंरभ किये गये इस नवीन जन रूचि के कार्यक्रम में पहला व्यख्यान सुप्रसिद्ध फिल्मकार, विचारक, चिन्तक एवं वक्ता डॉ. चन्द्रप्रकाश द्विवेदी द्वारा हमारी सांस्कृतिक परंपरा, प्रासंगिकता एवं चुनौतियां विषय पर दिया गया।

इस कम में दूसरे व्याख्यान के वक्ता पद्मभूषण डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक और खगोलविद थे जिन्होंने काल, आकाश और गुरूत्वाकर्षण विषय पर एक अत्यधिक रोचक एवं ज्ञान वर्धक व्याख्यान दिया गया। आलोकन नामक इस राष्ट्रीय व्याख्यानमाला को भविष्य में भी विभाग द्वारा जारी रखे जाने का भी निर्णय लिया गया है।

- सूरजकुंड मेला– सूरजकुंड, हरियाणा में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय मेले में इस वर्ष छत्तीसगढ़ थीम स्टेट था। इस हेतु दिनांक 01 से 15 फरवरी

तक आयोजित इस विशाल समारोह में विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ के सृजनात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं की प्रस्तुतियों हेतु विशेष आयोजन किये गये। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण मेले प्रांगण को छत्तीसगढ़ के विविध स्थापत्य एवं शिल्प कला शैली का उपयोग करते हुए विशेष साज–सज्जा की गयी तथा पारम्परिक छत्तीसगढ़ व्यंजनों के आस्वादन का अवसर भी दर्शकों को उपलब्ध कराया गया। मेले में अपना घर नामक एक प्रादर्श का निर्माण किया गया था। जिसमें राज्य के रजवार समुदाय के द्वारा आकर्षक भित्ति चित्रण एवं जाली निर्माण कला का उपयोग करते हुए एक अति सुंदर पारम्परिक रजवार आवास की रचना की गयी। विभाग के द्वारा सूरज कुंड मेले में आयोजित सभी गतिविधियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों से अत्यंत सराहना प्राप्त हुई एवं इसके माध्यम से राज्य की संस्कृति की बहुरंगीय आयामों को संप्रेषित करने का सुंदर अवसर सुलभ हो पाया।

- **ओड़िसी उल्लास** – ओड़िसी नृत्य के विभिन्न कलाकारों द्वारा जयदेव रचित 'गीतगोविंद' पर केन्द्रित ओड़िसी नृत्य का आयोजन दिनांक 20 से 22 फरवरी 2015 तक मुक्ताकाश मंच, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर मं आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ओड़िसी नृत्य के अनेक लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय एवं वरिष्ठतम कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। जिनमें पद्मभूषण डॉ. सोनल मानसिंह, पद्मश्री मिनिती मिश्रा, पद्मश्री रंजना गौहर आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

- छत्तीसगढ़ शासन संस्कृति विभाग के अंतर्गत सफर मुक्ताकाश, लोकगीत नृत्य, गीष्मकालीन शिविर, कवि–दिवस, पावस प्रसंग, चक्रधर समारोह, हिन्दी दिवस समारोह, शास्त्रीय संगीत समारोह आदि का आयोजन संपन्न किया गया है, जो भविष्य में भी निरन्तर जारी रहेगा।

- **अखिल भारतीय कवि सम्मेलन** – राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयन्ती के अवसर पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन दिनांक 03 अगस्त 2014 से 06 अगस्त 2014 तक (रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर एवं धमतरी) आयोजित कराया गया है।

विभाग के अंतर्गत स्थापित राज्य स्तरीय सम्मान–

- **पं. सुन्दरलाल शर्मा सम्मान** – साहित्य/आंचलिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2014–15 में यह सम्मान श्री तेजेन्दर गगन को किया गया है।
- **चक्रधर सम्मान** – कला/शिल्प कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2014–15 में यह सम्मान सुश्री वासंती वैष्णव को दिया गया है।

- **दाऊ मंदराजी सम्मान** – लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान प्रदान किया जाता है। वर्ष 2014–15 में यह सम्मान श्री अनूप रंजन पाण्डेय एवं श्री एल.पी. गोस्वामी को संयुक्त रूप से दिया गया है।
- **माता कौशिल्या सम्मान** – महिला उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये माता कौशिल्या सम्मान स्थापित किया गया है।

इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के सम्मान समारोह का समन्वय एवं अलंकरण समारोह संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित किया गया।

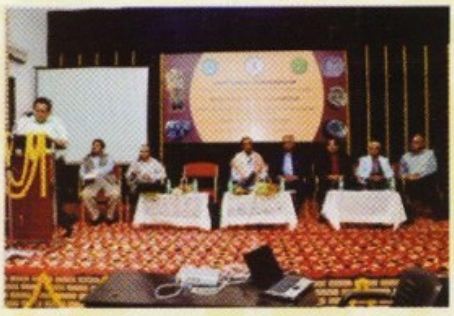

संगोष्ठी–

संस्कृति विभाग के अंतर्गत सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार–प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों

की संकल्पना को क्रियान्वित करनें हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है –

- एपिग्राफिकल सोसाइटी एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त रूप से छत्तीसगढ़ के अभिलेखों पर केन्द्रित 3 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन रायपुर में किया गया। आयोजन में देश के विभिन्न अंचलों के विद्वानों के शोध आलेखों के पठन के साथ–साथ छत्तीसगढ़ अंचल से ज्ञात एवं प्रकाशित अभिलेखीय इतिहास पर सारगर्भित चर्चा से आयोजन में पधारे विद्वान भी परिचित हुए तथा राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ का पुरा–वैभव प्रचारित प्रसारित हुआ। इस आयोजन में आमंत्रित विद्वानों को सिरपुर भी भ्रमण करवाया गया तथा समापन कार्यक्रम भी सिरपुर में संपन्न किया गया।

प्रदर्शनी –

संस्कृति विभाग के अंतर्गत सांस्कृतिक परंपराओं एवं ऐतिहासिक धरोहरों के प्रचार–प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से कराया जा रहा है।

संचालनालय के कलादीर्घा में वर्ष भर विभिन्न विषयों पर विविध कलाकारों के प्रदर्शनियां संचालित होते रहती है। इसी में संस्कृति विभाग द्वारा भी स्वतः समय–समय पर प्रदर्शनियों का संयोजन किया जाता है जिसके अंतर्गत इस वर्ष छत्तीसगढ़ के पुरातत्वीय स्थल पर प्रदर्शनी एवं स्वामी विवेकानंद की जीवनी पर एक सहयोगात्मक फोटोप्रदर्शनी का आयोजन विशेष उल्लेखनीय है। विभाग के सहयोग से एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी लेखक–पुस्तक सम्वाद के अवसर पर इस दीर्घा में किया गया था। संबंधित अन्य विवरण निम्नानुसार हैं :–

- जनसामान्य में पुरातत्व के प्रति जागरूकता लाने के लिए 19 से 25 नवम्बर,

2014 को 'विश्व धरोहर सप्ताह' के अवसर पर पुरातत्वीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- राज्योत्सव के अवसर पर महेशपुर, सिरपुर, पचराही, मदकूद्वीप के उत्खनन से प्रकाश में आये पुरावशेषों/ मंदिरावशेषों की छायाचित्र के माध्यम से प्रदर्शनी लगा कर दर्शकों को जानकारी दी गयी।
- राजिम कुंभ, राज्योत्सव एवं बस्तर दशहरा में नियमित रूप से प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।
- बोड़ला, जिला–कबीरधाम में पांच दिवसीय पुरातत्वीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- विभाग के द्वारा किये जा रहे उत्खनन कार्य में प्राप्त उपलब्धियों को दिनांक 18.11.2014 से 25.11.2014 तक विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर आर्ट गैलरी में छायाचित्र के माध्यम से प्रदर्शन किया गया।

फोटोग्राफी शाखा–

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में फोटो अभिलेखागार व संगीत संग्रह भवन का निर्माण कर आंतरिक साज सज्जा की कार्यवाही प्रचलन में है।

लोक शिल्पियों की कार्यशाला सह प्रशिक्षण 'आकार'–

आकार प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत ढोकरा शिल्प, मृदा शिल्प, म्यूरल आर्ट, पेंटिंग, ड्राई फ्लावर, पट चित्र, मधुबनी, क्ले आर्ट, रजवार, जूट शिल्प, बोनसाई, फड़ पेन्टिंग तथा नाट्य प्रशिक्षण के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिल्प गुरुओं द्वारा बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। इन शिविरों में नाटक व शास्त्रीय नृत्यों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से लोक शिल्पियों की कार्यशाला रायपुर के अतिरिक्त बिलासपुर, कोरबा, अंबिकापुर एवं जदलपुर में भी आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया गया।

विभाग से सम्बद्ध ईकाइयां

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग –

- आर्थिक रूप से असमर्थ साहित्यकारों को प्रकाशन हेतु 10 हजार रूपये का अनुदान योजना के अंतर्गत इस वर्ष 40 पांडुलिपियों का प्रकाशन हुआ।
- छत्तीसगढ़ की महिला साहित्यकारों को प्रेरित करने महिला साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें 50 महिला साहित्यकारों ने प्रतिभागिता दी।

- छत्तीसगढ़ी को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने पुस्तिका का प्रकाशन किया गया।
- छत्तीसगढ़ के स्थानीय भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों के संकलन हेतु संचालित माई कोठी योजना में 883 पुस्तकों का क्रय किया गया।
- छत्तीसगढ़ी को 8वीं अनुसूची में शामिल करने, राजकाज की भाषा बनाने, एवं पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के उद्देश्य से तृतीय प्रांतीय सम्मेलन का बिलासपुर में आयोजन।

विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना –

स्वामी विवेकानन्द जी ने कोलकाता के पश्चात् अपने जीवन का सर्वाधिक समय रायपुर में व्यतीत किया। उनके जीवन काल को स्मरणीय बनाने हेतु शासन द्वारा विवेकानन्द प्रबुद्ध विश्व संस्थान की स्थापना की गई है, जिसके अन्तर्गत स्वामी जी के विचारों के अनुकूल अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारत दर्शन, प्रबंधन शास्त्र, युवा कल्याण एवं ग्रामीण विकास जैसे विषयों पर अध्ययन एवं शोध कार्य संचालित किए जायेंगे। इस दिशा में कार्यवाही की जा रही है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ, भिलाई –

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग के अन्तर्गत डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की स्मृति में साहित्यिक संस्था सृजनपीठ कार्यरत है। इस संस्थान ने अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों से अब पूरे देशभर के साहित्यकारों में अपनी पहचान और सम्मानजनक स्थान बना लिया है। सृजनपीठ के द्वारा ''सृजन पत्रिका' समयानुकूल प्रकाशित की जा रही है। ''सुरता'' कार्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ एवं राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकारों पर विचार गोष्ठी प्रतिमाह आयोजित की जा रही है। छत्तीसगढ़ के रायपुर, खैरागढ़, राजनांदगांव, भिलाई, अंबागढ़ चौकी आदि स्थानों में विचार–विमर्श गोष्ठियां एवं व्याख्यान का आयोजन होता रहा है। वरिष्ठ साहित्यकारों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्रंथालय का उपयोग शोद्यार्थी एवं पुस्तक प्रेमी करते है।

छत्तीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान का गठन –

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग द्वारा संचालित छत्तीसगढ़ सिन्धी साहित्य संस्थान द्वारा गतिविधियों/कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जा रहा है। संस्थान द्वारा बच्चों को सिन्धी भाषा की शिक्षा देने हेतु रायपुर के विभिन्न सिन्धी बाहुल्य क्षेत्रों में तीन केन्द्र, वहां की पूज्य सिन्धी पंचायतों के सहयोग से संचालित हैं। संस्थान द्वारा सिन्धी भाषा एवं संस्कृति के उत्थान हेतु विभिन्न कियाकलाप समय–समय पर शासन के सहयोग से संचालित किए जाते रहे हैं।

दक्षिण–मध्य–क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की सदस्यता –

विभाग द्वारा पड़ोसी राज्य से सांस्कृतिक संबंध विकसित करने एवं राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2005 से दक्षिण–मध्य–क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर की सदस्यता ग्रहण कर नियमित रूप से कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी प्रकार संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम, अभिलेखन, कार्यशाला का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है।

संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, रायपुर के विभागाध्यक्ष तथा मैदानी कार्यालयों की स्वीकृत पद संरचना 2013–14

क.	पद नाम	श्रेणी	वेतनमान	स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद	रिमार्क
1	संचालक/आयुक्त	प्रथम	भा.प्र.सेवा	01	01	00	
2	संयुक्त संचालक	प्रथम	15600–391007600	02	01	01	1 पद पर प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत।
3	उप संचालक	प्रथम	15600–391006600	06	05	01	06 पदों में से 01 पद संविदा नियुक्ति एवं 01 पद प्रतिनियुक्ति एवं 01 पद रिक्त है।
4	उप संचालक(वित्त) (लेखाधिकारी पद से उन्नयन)	प्रथम	15600–391006600	01	01	00	
	योग :–			**10**	**08**	**02**	
5	सहायक संचालक	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
6	सहायक संचालक	द्वितीय	9300–34800 4400	01	01	00	राजभाषा आयोग में प्रतिनियुक्ति पर गए।
7	प्रकाशन अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	वर्तमान में मानदेय आधार पर भरा गया है।
8	मुद्राशास्त्री	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
9	पुरातत्ववेत्ता	द्वितीय	15600–391005400	02	00	02	
10	ग्रंथपाल	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
11	सहायक यंत्री	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
12	मुख्य रसायनज्ञ	द्वितीय	15600–39105400	01	01	00	
13	पुरातत्वीय अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	01	00	प्रतिनियुक्ति से भरा गया।
14	पुरालेख अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
15	पुरालेखवेत्ता	द्वितीय	15600–391005400	01	00	01	
16	संग्रहाध्यक्ष	द्वितीय	15600–391005400	07	03	04	
17	संरक्षण अधिकारी	द्वितीय	9300–348004400	01	00	01	
	योगः–			**20**	**06**	**14**	
18	सहायक पुरालेख अधिकारी	तृतीय	9300–348004300	01	00	01	
19	अधीक्षक	तृतीय	9300–348004300	01	00	01	
20	अनुदेशक	तृतीय	9300–348004300	02	01	01	

21	कनिष्ठ लेखाधिकारी	तृतीय	9300–348004200	01	00	01	
22	सहायक अधीक्षक	तृतीय	9300–348004200	01	01	00	
23	सहायक ग्रंथपाल	तृतीय	9300–348004200	02	02	00	
24	सहायक प्रोग्रामर	तृतीय	9300–348004300	01	01	00	
25	उपयंत्री	तृतीय	9300–348004200	04	03	01	एक पद प्रतिनियुक्ति का है।
26	मानचित्रकार	तृतीय	9300–348004200	02	02	00	
27	कलाकार	तृतीय	9300–348004200	02	01	01	
28	रसायनज्ञ	तृतीय	9300–348004200	02	01	01	
29	शोध सहायक	तृतीय	9300–348004200	02	02	00	
30	सहायक वर्ग –1	तृतीय	5200–202002800	01	00	01	
31	तकनीकी सहायक (लेखन)	तृतीय	5200–202002800	02	02	00	
32	सहायक पुरालेखपाल	तृतीय	5200–202002800	01	01	00	
33	सहायक कलाकार	तृतीय	5200–202002800	02	01	01	
34	सहायक रसायनज्ञ	तृतीय	5200–202002800	02	01	01	
35	उत्खनन सहायक	तृतीय	5200–202002800	03	03	00	
36	अनुवादक	तृतीय	5200–202002800	02	02	00	
37	सहायक वर्ग– 2	तृतीय	5200–202002400	16	14	02	
38	स्टेनोग्राफर	तृतीय	5200–202002800	03	02	01	
39	वीडियोग्राफर	तृतीय	5200–202002800	01	01	00	
40	पर्यवेक्षक	तृतीय	9300–348004300	01	01	00	
41	सर्वेयर	तृतीय	5200–202002400	03	01	02	
42	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	तृतीय	5200–202002400	08	08	00	
43	मार्गदर्शक / गाईड	तृतीय	5200–202002800	04	03	01	
44	वरिष्ठ मार्गदर्शक	तृतीय	9300–348004300	03	00	03	
45	स्वागतकर्ता	तृतीय	5200–202002800	02	01	01	सीधी भर्ती का पद
46	सहायक उद्यान विकास अधिकारी	तृतीय	9300–34800+4200	01	00	01	प्रतिनियुक्ति का पद
47	स्टेनों टायपिस्ट	तृतीय	5200–202001900	05	05	00	
48	सहायक ग्रेड–3	तृतीय	5200–202001900	21	14	07	
49	वाहन चालक	तृतीय	5200–202001900	03	03	00	

50	मोल्डर/सेल्समेन	तृतीय	5200–20200 1900	02	02	00	
51	बाईन्डर	तृतीय	5200–20200 1900	01	01	00	
योगः–				108	80	28	
52	भृत्य (नियमित)	चतुर्थ	4750–7440 1300	29	15	14	
53	चौकीदार (नियमित)	चतुर्थ	4750–7440 1300	11	02	09	
54	केयटेकर (संग्रहालय गैलरी हेतु)	चतुर्थ	4750–7440 1300	04	01	03	
योगः–				44	18	26	
55	केयर टेकर	चतुर्थ	4750–7440 1300	12	12	00	सांख्येत्तर
56	स्वीपर	चतुर्थ	4750–7440 1300	01	01	00	
57	चौकीदार	चतुर्थ	4750–7440 1300	01	01	00	
58	उद्यान रेजा	चतुर्थ	4750–7440 1300	01	01	00	
59	उद्यान मजदूर	चतुर्थ	4750–7440 1300	02	02	00	
60	भृत्य	चतुर्थ	4750–7440 1300	01	01	00	
योग :–				18	18	00	
महायोग :–				200	130	70	

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व
–:: विभागीय सेटअप में स्वीकृत, चतुर्थ श्रेणी के भरे एवं रिक्त पदों की जानकारी ::–
केवल जिलाध्यक्ष दर पर स्वीकृत

क.	पद नाम	श्रेणी	वेतनमान	स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद	रिमार्क
61	चौकीदार (जिलाध्यक्ष दर पर)	चतुर्थ	(जिलाध्यक्ष दर पर)	01	00	01	
62	अंशकालिक फर्राश (जिलाध्यक्ष दर पर)	चतुर्थ	(जिलाध्यक्ष दर पर)	01	00	01	
63	केयर टेकर (जिलाध्यक्ष दर पर)	चतुर्थ	(जिलाध्यक्ष दर पर)	12	12	00	
64	स्वीपर (पार्ट टाईम)	चतुर्थ	(जिलाध्यक्ष दर पर)	04	00	04	
65	चौकीदार (संग्रहालय एवं स्मारकों हेतु)	चतुर्थ	(जिलाध्यक्ष दर पर)	68	68	00	
			योग :–	**86**	**80**	**06**	

	छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग						
66	अध्यक्ष	प्रथम	25000 प्र.मा.	01	—	1	
67	सदस्य	प्रथम	18000 प्र.मा.	02	—	2	
68	सचिव	प्रथम	37400–670008900	01	1	—	
69	उप सचिव	प्रथम	15600–391007600	01	—	1	
70	लेखाधिकारी सह प्रशा. अधिकारी	द्वितीय	15600–391005400	01	—	1	
71	सहायक संचालक	द्वितीय	15600–391005400	01	1	—	
72	हिन्दी/छत्तीसगढ़ी अनुवादक	तृतीय	9300–348004300	01	1	—	
73	शोध सहायक	तृतीय	9300–348004200	01	—	1	
74	अधीक्षक	तृतीय	9300–348004200	01	—	1	
75	सहायक ग्रेड–2	तृतीय	5200–202002400	01	—	1	
76	स्टेनोग्राफर	तृतीय	5200–202002800	02	—	2	
77	सहायक ग्रेड–3	तृतीय	5200–202001900	02	2	—	
78	कम्प्यूटर आपरेटर		8000 संविदा	01	—	1	
79	वाहन चालक		5200–202001900	02	2	—	
80	भृत्य		4750–74401300	02	2	—	
81	स्वीपर		अंशकालीन	01	1	—	
			योग :–	**21**	**10**	**11**	

संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व
बजट प्रावधान की जानकारी वित्तीय वर्ष 2014–15

(आंकड़े हजार रू. में)

क्र.	बजट का मद	आयोजनेत्तर	आयोजना	योग
1	2	3	4	5
	मांग संख्या 26 लेखा शीर्ष 2202 सामान्य शिक्षा			
1	102 आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य का संवर्धन	11272	8825	20097
	योग – 2202	**11272**	**8825**	**20097**

मांग संख्या 26 लेखा शीर्ष 2205 कला और संस्कृति

(आंकड़े हजार रू. में)

1	101–ललित कलाओं की शिक्षा	900	12500	13400
2	102–कलाओं एवं संस्कृति का संवर्धन	1600	93400	95000
3	103–पुरातत्व	41300	24000	65300
4	104–अभिलेखागार	4106	0	4106
5	105–सार्वजनिक पुस्तकालय	5000	3300	8300
6	107–संग्रहालय	30039	0	30039
7	800–अन्य व्यय	0	0	0
	योग – 2205	**82945**	**133200**	**216145**

मांग संख्या 26 लेखा शीर्ष 3454 जनगणना सर्वेक्षण एवं सांख्यिकीय

(आंकड़े हजार रू. में)

1	110–गजेटियर और सांख्यिकीय विवरण	0	4659	4659
	योग – 3454	**0**	4659	**4659**
	कुल योग मांग संख्या 26	**94217**	**146684**	**240901**

मांग संख्या 41 लेखा शीर्ष 2205 कला और संस्कृति

(आकड़े हजार रू. में)

1	107–संग्रहालय	0	50000	50000
	योग मांग संख्या 41	**0**	**50000**	**50000**

मांग संख्या 48 लेखा शीर्ष 2205 कला और संस्कृति तथा 4202 – शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति पर पूंजी परिव्यय

(तेरहवें वित्त आयोग की अनुशंसा के अंतर्गत प्राप्त सहायता अनुदान)

(आंकड़े हजार रू. में)

1	2205–103–पुरातत्व	0	72500	72500
2	4202–106–संग्रहालय	0	40000	40000
	योग मांग संख्या–48	**0**	**112500**	**112500**

वित्तीय वर्ष 2014–15 में प्रथम एवं द्वितीय अनुपूरक में प्राप्त राशि की जानकारी

मांग संख्या 26 लेखा शीर्ष 2205 कला और संस्कृति

(आंकड़े हजार रू. में)

1	2205 – 102 – कलाओं और संस्कृति का संवर्धन	0	6500	6500
2	2205 – 107 – संग्रहालय	1669	0	1669
	योग मांग संख्या 26	**1669**	**6500**	**8169**

मांग संख्या 26, 41 एवं 48 का योग

(आंकड़े हजार रू. में)

	महायोग मांग संख्या 26	**95886**	**153184**	**249070**
	योग मांग संख्या 41	**0**	**50000**	**50000**
	योग मांग संख्या–48	**0**	**112500**	**112500**
	महायोग	**95886**	**315684**	**411570**

विभागीय प्रकाशन

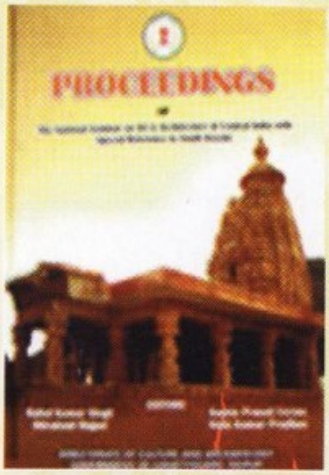

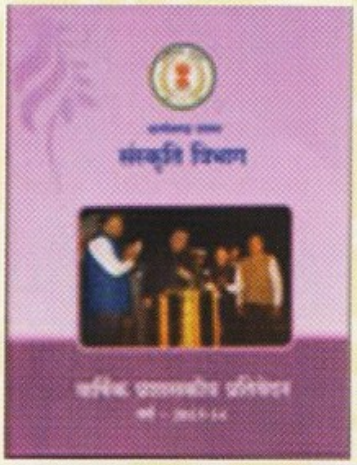

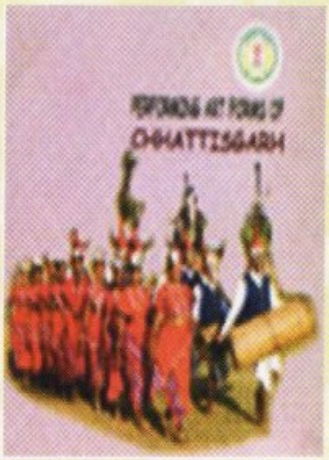

उत्खनन स्थल डमरू, जिला बलौदाबाजार भाटापारा

' रञो श्री अचंटदासस्ये युगे ' अभिलिखित मुद्रांक

राज्योत्सव 2014 में नर्तक वादक तथा कलाकारों का संगम